रचनात्मक उत्खनन : हीरे जैसी कविताएँ

*दूधनाथ सिंह ने **सदानीरा** में प्रकाशन के लिए एक अनाम कवि की कविताएँ भिजवाई हैं। जिस दिन कविताएँ मुझे मिलीं और मैंने उनको पढ़ा तो मुझे लगा कि अचानक मुझे हीरे की खदानें मिल गईं। सचमुच इस अनाम कवि की कविताएँ हीरे की तरह चमकती हैं। उनको पढ़ने के बाद मैं रात भर ठीक से सो नहीं सका। उस अदृश्य अनाम कवि और उसकी दृष्ट उपस्थित कविताओं ने मुझे दु:ख और अवसाद की एक गहरी भँवर में डाल दिया। क्या किसी की रचनात्मकता के साथ ऐसा सलूक किया जाए कि कोई प्रकाशक उसकी पाण्डुलिपि मिलने पर वह यह भी परवाह न करें कि उसका लेखक कौन है, उसका क्या पता है और कहीं भी अपने यहाँ पाण्डुलिपि की आमद को दर्ज़ न करें और उनको किसी बोरी में भरकर एक तरफ डाल दें? यदि लेखकों के साथ ऐसा होता है तो यह निहायत ग़ैर-जिम्मेदार अपराधिक कृत्य है जो मात्र निन्दनीय नहीं है, उस पर लेखकों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि क्या किसी प्रकाशक को ऐसा व्यवहार करने की अनुमति दी जा सकती है?*

एक प्रश्न और है- हमारे समकालीन लेखकों का एक-दूसरे की रचनात्मकता के प्रति क्या रवैय्या है? यह मेरी दृढ़ मान्यता है कि हम अपने को छोड़कर और किसी रचनाकार के प्रति अपनी उत्सुकता कभी प्रगट नहीं करते हैं। यहाँ तक कि हमारे मन